विश्व सामाजिक मंच : भूमण्डलीकरण के छद्म-विरोध का नया प्रपंच : विश्व पूँजीवाद का नया 'ट्रोजन हॉर्स'

• गौरव

पिछले14 से 21 जनवरी के बीच मुम्बई में साम्राज्यवादी भूमण्डलीकरण के नाम पर जो महातमाशा हुआ, उसमें दुनिया भर के गैर सरकारी संगठनों और चुनावी चाट के आदी नकली वामपंथियों की भारी जुटान हुई। विश्व सामाजिक मंच के इस चौथे सम्मेलन का बुर्जआ मीडिया ने जमकर प्रचार किया। तमाम मसलों पर खूब विचार-विमर्श हुए, खूब खेल-तमाशे हुए और फिर बिना किसी नतीजे पर पहुँचे सभी भागीदार वापस लौट गये।

इस मंच ने अपने घोषणापत्र में 'एक दूसरी दुनिया संभव है' जैसा लुभावना नारा उछाला है, जिससे यह भ्रम पैदा होता है कि यह मंच साम्राज्यवादी-पूँजीवादी विश्व व्यवस्था के खिलाफ एक नयी विश्व व्यवस्था की पैरोकारी करने वाला मंच है। लेकिन इस मंच के उद्देश्यों, उसके गठन की प्रक्रिया, इसमें भागीदार प्रमुख संगठनों के चरित्र और इसे आर्थिक सहयोग देने वाली संस्थाओं के चरित्र की छानबीन की जाये तो किसी को भी यह समझते देर नहीं लगेगी कि इस मंच की असली मंशा कुछ और ही है। यह दुनिया भर में साम्राज्यवाद पूँजीवाद विरोधी जनसंघर्षों को गुमराह करने के लिए खड़ी की गयी एक धोखे की टट्टी है। इसलिए क्रान्तिकारी-शक्तियों की यह अहम जिम्मेदारी बनती है कि वे हर मुमकिन तरीके से इसकी असलियत को आम लोगों के बीच बेनकाब करें, जिससे धुँधलका छँट सके और साम्राज्यवाद-पूँजीवाद विरोधी जनसंघर्षों की सही दिशा उभरकर सामने आ सके।

सबसे पहले उस पृष्ठभूमि को समझना जरूरी है, जिसमें विश्व सामाजिक मंच अस्तित्व में आया। वर्ष 1999 में विश्व व्यापार संगठन की सिएटल बैठक के दौरान हुए ज़बर्दस्त जनप्रदर्शन के बाद साम्राज्यवादी भूमण्डलीकरण की नीतियों के विरोध में दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में बिखरे हुए जनसंघर्ष लगातार उठते रहे हैं। अफगानिस्तान पर अमेरिका हमले और इराक पर ताजा हमले और कब्जे से दुनिया भर में साम्राज्यवादी लुटेरों के खिलाफ जनता का आक्रोश लगातार बढ़ता गया है। खुद अमेरिका और यूरोपीय साम्राज्यवादी देशों के भीतर भी युद्ध विरोधी प्रदर्शनों की बाढ़ सी आ गयी थी। इससे सभी साम्राज्यवादी डाकुओं का चिंतित हो जाना लाजिमी है। साम्राज्यवादियों के विचारक यह बखूबी जानते हैं कि जनअसंतोष को अगर उन्होंने सिर्फ खुले दमन के हथकंडों से दबाने की कोशिश की तो ये और भड़क उठेंगे। इसलिए उन्होंने एक ऐसी तरकीब निकालने के बारे में सोचा, जिससे विराध का छद्म भी बना रहे और पूँजीवादी-साम्राज्यवादी लूट-तन्त्र को कोई नुकसान भी न पहुँचे। इसी पृष्ठिभूमि में और साम्राज्यवादियों की कपटी चालों से विश्व सामाजिक मंच अस्तित्व में आया।

ब्राजील के शहर पोर्तो अलेग्रे में वर्ष 2000 में विश्व सामाजिक मंच का पहला सम्मेलन आयोजित हुआ था। इस मंच के गठन का प्रस्ताव फ्रांस सरकार के टुकड़ों पर पलने वाली संस्था 'अटैक' (ए.टी.टी.ए.सी. -एसोसिएशन फॉर द टैक्सेशन ऑफ फाइनेंशियल ट्रांजेक्शन्स एण्ड फॉर असिस्टेंस टू सिटिजंस) नामक संस्था के बर्नार्ड काजेन ने किया था। इस प्रस्ताव को ब्राजील के मौजूदा राष्ट्रपति लूला दा मेला की वर्कर्स पार्टी और ब्राजील में काम करने वाली आठ नामधारी गैरसरकारी संस्थाओं ने हाथों-हाथ लिया और उन्होंने मार्च 2000 में पोर्तो अलेग्रे में सम्मेलन करना तय किया। बाद में यूरोप में काम कर रहे दर्जनों एन.जी.ओ. इससे जुड़ते चले गये।

डब्ल्यू.एस.एफ. के इस पहले आधिकारिक सम्मेलन में 10,000 लोग इकट्ठा हुए। दिलचस्प बात यह है कि इस आधिकारिक सम्मेलन के समांतर पोर्तो अलेग्रे में ही एक और सम्मेलन हुआ जिसमें 50000 से अधिक लोग इकट्ठा हुए थे। इस सम्मेलन के मुख्य कर्ता-धर्ता किसिम-किसिम के एन.जी.ओ. ही थे, लेकिन सम्मेलन में बड़ी संख्या में शामिल आम आबादी भूमण्डलीकरण की लुटेरी नीतियों के खिलाफ अपने गुस्से का इजहार करने पहुँची थी। हालाँकि आधिकारिक सम्मेलन के आयोजकों ने इस समांतर सम्मेलन को नज़रअंदाज किया और अपना एक 18 सूत्री घोषणापत्र जारी किया।

सम्मेलन के लिए पोर्तो अलेग्रे का चुनाव भी अनायास नहीं था। यह शहर उस राज्य की राजधानी है, जहाँ उस समय ब्राजील की वर्कर्स पार्टी की अगुवाई में एक मिली-जुली सरकार कायम थी। पार्टी के मुखिया लूला आगे संसदीय चुनाओं में जीतकर ब्राजील के राष्ट्रपति बने। इस राज्य में लूला की पार्टी के सहयोग-समर्थन से पूँजीवादी जनतंत्र को मजबूत बनाने वाले एन.जी.ओ. मार्का सुधार के काम जैसे 'भागीदारी जनतंत्र' 'जमीनी जनतंत्र' जैसे लुभावने जुमलों की आड़ में गरीब और वंचित आबादी को सत्ता में भागीदारी दिलाने की कवायदें बड़े पैमाने पर चल रही हैं। कहा जा सकता है कि पोर्तो अलेग्रे दुनिया भर के एन.जी.ओ. का मक्का बन गया है।

डब्ल्यू.एस.एफ. की ब्राजीली आयोजन समिति इसके अन्तरराष्ट्रीय सचिवालय का काम करती है, जिसमें 'अटैक', लूला की वर्कर्स पार्टी और उसके यूरोपीय बिरादरों का ही दबदबा है। मंच की अन्तररष्ट्रीय परिषद 80 संगठनों को मिलाकर बनी है जिसमें 'अटैक', 'जेनोवा सोशल फोरम', त्रात्सकीपंथी चौथे इंटरनेशनल का एक धड़ा, 'अमेरिका काउंसिल ऑफ सोशल साइंसेज', सामिर अमीन का 'वर्ल्ड फोरम ऑफ आल्टरनेटिव्स' और इटली के 'कम्युनिस्ट रिफाउंडेशन' समेत तरह-तरहके एन.जी.ओ. की भरमार है।

डब्ल्यू.एस.एफ. का दूसरा और तीसरा सम्मेलन भी पोर्तो अलेग्रे में ही हुआ। जनवरी 2002 में आयोजित दूसरे सम्मेलन में कई यूरोपीय देशों की सरकारों ने अपने उच्चस्तरीय प्रतिनिधिमण्डल भेजे। फ्राँस के राष्ट्रपति जॉक शिरॉक ने प्रधानमंत्री लियोनेल जॉस्पें सहित छः मंत्रियों और पेरिस के मेयर को सम्मेलन में भेजा। इसके अलावा बेल्जियम के प्रधानमंत्री और फर्तगाल के पूर्व राष्ट्रपति जिन्होंने अपने देश में मजदूर वर्ग के भारी विरोध को अनदेखा कर धड़ल्ले से भूमण्डलीकरण की नीतियाँ लागू की थीं, भी इस सम्मेलन में पहुँचे हुए थे।

डब्ल्यू.एस.एफ. बनने की यह कहानी और सम्मेलनों में यूरोपीय साम्राज्यवादी लुटेरों के राजनीतिक नुमाइंदों की भागीदारी उसके भूमण्डलीकरण विरोधी चेहरे को अपने आप नोंचकर फेंक देती है। लेकिन भ्रम की कोई गुंजाइश न रहे इसके लिए उसके घोषणापत्र में किये गये राजनीतिक दावों और उसे रकम मुहैया कराने वालों के चेहरों को देख लेना भी जरूरी है।

●

डब्ल्यू.एस.एफ. का घोषणापत्र यह दावा करता है कि यह मंच साम्राज्यवाद के सभी रूपों और पूँजी के विश्वव्यापी दबदबे तथा नवउदारवाद (या भूमण्डलीकरण की नीतियों) का विरोध करने वाले 'सभ्य समाज' के विभिन्न समूहों एवं आंदोलनों को कारगर कार्रवाई के लिए एक मंच पर लाने की कोशिश है। इसके लिए यह मंच करेगा क्या? वस्तुतः कुछ नहीं! क्योंकि यह मंच केवल इन समूहों और आंदोलनों के बीच 'जनवादी ढंग से विचारों के आदान-प्रदान' और 'गहन चिंतन-मनन' का खुला मंच है। यानी यह कोरी गप्पबाजी का अड्डा है। मंच के तथाकथित सभ्य समाज की अवधारणा में ही वह असली झोल है, जिसके तहत दुनिया की जनता के जालिम लुटेरे हुक्मरान भी आते हैं और इनके शोषण व जोरो-जुल्म का विरोध करने वाली जनता भी। मंच जालिमों के दरबार में मजलूमों की नालिश कराने का खुला मौका देना चाहता है। गौरतलब है कि 'सभ्य समाज' की यह शब्दावली आजकल एन.जी.ओ. वालों ही नहीं बल्कि विश्व बैंक अंतरराष्ट्रीय मुद्राकोष और संयुक्त राष्ट्रसंघ जैसी लुटेरी संस्थाओं के दस्तावेजों में खूब चलन में है।

लेकिन इस खुले मंच का खुलापन उस समय बेनकाब हो जाता है जब यह क्रान्तिकारी जनांदोलनों एवं समूहों के लिए इस मंच के दरवाजे पूरी तरह बंद कर लेने का ऐलान अपने घोषणापत्र में करता है। **"मंच में न तो पार्टियों और न ही सशस्त्र कार्रवाई करने वाले संगठनों के प्रतिनिधि शामिल हो सकते हैं। (मंच के) घोषणापत्र को स्वीकार करनेवाले सरकार के नेताओं और विधायिकाओं के सदस्यों को व्यक्तिगत रूप से शामिल होने का आमंत्रण दिया जा सकता है।"**

मंच के घोषणापत्र का नौवां नुक्ता ठीक-ठीक यही बात करता है। साफ है कि यह खुला मंच दुनिया के लुटेरे शासक वर्गों के नुमाइंदों, मज़दूर वर्ग से गद्दारी कार पूँजीवाद-साम्राज्यवाद की चाकरी में जुटी सी.पी.आई.-सी.पी.एम. जैसी सामाजिक जनवादी पार्टियों (चुनावी वामपंथी पार्टियों) और तरह-तरह के एन.जी.ओ. के लिए तो खुला है लेकिन क्रान्तिकारी पार्टियों ओर उनके सैन्य विभागों के लिए इसके दरवाजे पूरी तरह बंद हैं।

मंच किस तरह कोरी गप्पबाजी का अड्डा है इसे भी स्वयं घोषणापत्र ही जाहिर कर देता है। इसमें एक जगह कहा गया है कि मंच ऐसी संस्था नहीं है, जो उसमें शामिल सभी संगठनों और लोगों की ओर कोई साझा निर्णय लेगी। यानी व्यवहारतः वह कोई कार्रवाई नहीं करेगा सिर्फ "गहन चिन्तन-मनन" के लिए जगह मुहैया करायेगा। यानी मंच के कर्ता-धर्ता पूँजीवाद-साम्राज्यवाद को सिर्फ एक बिगड़ा हुआ बच्चा मानते हैं जिसे केवल समझा-बुझाकर व चिरौरी-मिन्नत कर ठीक रास्ते पर लाया जा सकता है। मंच पूँजीवाद-साम्राज्यवाद को उखाड़ फेंकने के लिए सशस्त्र संघर्ष करना 'सभ्य समाज' के खिलाफ मानता है। घोषणापत्र घुमा-फिराकर मार्क्सवादी राजनीतिक अर्थशास्त्र, समाज के विकास की मार्क्सवादी अवधारणा और समाजवाद का विरोध करते हुए हर तरह की हिंसा के खिलाफ अहिंसा के उपदेशक की मुद्रा अख्तियार कर 'मानवाधिकारों के सम्मान', 'वास्तविक जनवाद' और 'भागीदारी जनवाद' को लागू करने की चर्चा करने लगता है।

कुल मिलाकर नवउदारवादी (भूमंडलीकरण) की नीतियों और साम्राज्यवाद के सभी रूपों का विरोध करने की जुगाली करते हुए डब्ल्यू.एस.एफ. पूँजीवाद-साम्राज्यवाद विरोधी जनसंघर्षों की आँच पर पानी के छींटें डालने की शातिराना कारगुजारियों में लिप्त है। यह नयी दुनिया का जो नक्शा दुनिया के मेहनतकश अवाम के सामने पेश करने का दावा करता है वह और कुछ नहीं मुनाफे की अंधी लूट, युद्धों की तबाही और अनगिनत किस्म के अन्याय-अत्याचार में डूबी यही पूँजीवादी-साम्राज्यवादी दुनिया है। डब्ल्यू.एस.एफ. के कर्ता-धर्ता इस व्यवस्था का खात्मा नहीं चाहते, बस उसमें कुछ सुधार चाहते हैं, जिससे इसके कुरूप चेहरे को थोड़ा सा चमकाया जा सके। वे भूमण्डलीकरण के दानवी चेहरे पर एक मानवीय मुखौटा पहनाना चाहते हैं, जिससे दुनिया की जनता में पनप रहा आक्रोश ठंडा पड़ पाये और विश्व पूँजीवाद उसके कोप-कहर से महफूज रहे।

●

डब्ल्यू.एस.एफ. के भीतर आधे से अधिक संगठन साम्राज्यवादियों के टुकड़ों पर पलने वाले एन.जी.ओ. हैं। **फोर्ड फाउण्डेशन** ने वर्ष 2001 और 2002 में ब्राजील में सक्रिय एन.जी.ओ. क एसोसिएशन को 3,28000 डालर की रकम बाँटी। इसी तरह **आक्सफैम, हेनरिक बोल फाउण्डेशन, आई.सी.सी.ओ.** (इंटर चर्च कोआर्डिनेशन कमेटी फॉर डेवलेपमेंट प्रोजेक्ट) और **'अटैक'** जैसे अन्य एन.जी.ओ. मगरमच्छों ने डब्ल्यू.एस.एफ. को भारी रकमें मुहैया करायीं।

'आक्सफेम' (आक्सफोर्ड कमेटी फॉर फेमीन रिलीफ) का गठन द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद अकाल राहत पहुँचाने के नाम पर हुआ था। 1960 और 1970 के दशक में दुनिया के कई देशों में इसका तेजी से फैलाव हुआ और आज लगभग सभी देशों में इसका जाल फैल चुका है। यह दुनिया में "गरीबी और सामाजिक अन्याय और असमानताओं के बुनियादी कारणों" को दूर करने के नाम

पर तरह-तरह के "सुधार" कार्यों का जाल रचते हुए और कई दूसरे एन.जी.ओ. के प्रोजेक्टों को रकमें बाँटते हुए विश्व पूँजीवाद की सेवा में मुस्तैदी से जुटी है।

इसी तरह **हेनरिक बोल फाउण्डेशन** ने सामाजिक न्याय, लैंगिक न्याय, पारिस्थितिकी, टिकाऊ विकास आदि के नाम पर भी समाज सेवा का जाल बिछा रखा है। यह जर्मनी की मौजूदा सरकार में शामिल ग्रीन पार्टी से जुड़ी है, दुनिया के कई देशों में इसके दफ्तर और नेटवर्क हैं और यह कई इंस्टीट्यूट भी चलाती है। फेमिनिस्ट इंस्टीट्यूट इसी का अंग है।

आई.सी.सी.ओ. भी डब्ल्यू.एस.एफ. की एक भागीदार है जो एक प्रोटेस्टेंट एन.जी.ओ. है ओर इसे लगभग पूरी रकम हालैण्ड सरकार से मिलती है।

'अटैक' का गठन भी फ्राँस के एक नोबल फरस्कार विजेता अर्थशास्त्री जेम्स टोबिन के नाम पर हुआ था। टोबिन "मुक्त व्यापार" के जोशीले समर्थक हैं। टोबिन ने वित्त के अन्तरराष्ट्रीय लेन-देन पर 0.05-1.04 प्रतिशत तक टैक्स लगाने की नसीहत दी थी। मकसद यह बताया गया था कि इससे जो धनराशि वसूली जायेगी उसका इस्तेमाल "विकास", व "गरीबी से लड़ने" मे किया जायेगा। इस टैक्स को टोबिन टैक्स का नाम दिया गया। 'अटैक' इस टोबिन टैक्स के बारे में इस ढंग से प्रचार करता है जैसे इसके लागू होने से पूँजीवादी-साम्राज्यवादी लूटतंत्र को नुकसान पहुँचाये बिना गरीबी उड़नछू हो जायेगी और दुनिया विकास की डगर पर सरपट दौड़ चलेगी। फ्रांस की सरकार 'अटैक' को भारी मात्रा में धन मुहैया कराती है। फ्रांस के ही एक अखबार 'ल मोंद' के अनुसार विश्व सामाजिक मंच के पहले सम्मेलन का आयोजन करने के लिए फ्रांस के विदेश मंत्रालय ने 80,000 यूरो की रकम दी थी।

साम्राज्यवादियों के धन से चलने वाले फाउंडेशन और साम्राज्यवादियों के ही टुकड़ों पर पलने वाले एन.जी.ओ. के अलावा दुनिया भर में मज़दूरों की लड़ाइयों से गद्दारी कर पूँजीवाद की चाकरी करने में जुटी हुई सामाजिक जनवादी पार्टियाँ डब्ल्यू.एस.एफ. की मुख्य कर्ता-धर्ता हैं। ये सभी पार्टियाँ–चाहे भारत में सी.पी.आई-सी.पी.एम. जैसी पार्टियाँ हों या ब्राजील की वर्कर्स पार्टी–भूमण्डलीकरण की नीतियों को जोर-शोर से लागू कर रही हैं। ये सभी भूमण्डलीकरण की नीतियों के नुकसानदेह प्रभावों के विरोध की जुगाली करते हुए भूमण्डलीकरण के राक्षस पर मानवीय चेहरा चस्पां करने की कवायदों में जुटी हुई हैं। ब्राजील के राष्ट्रपति लूला तो पूँजीपति लुटेरों के वैश्विक आर्थिक मंच और विश्व सामाजिक मंच के बीच फल बनाने की जोर-शोर से वकालत करते हैं। भूमण्डलीकरण विरोध के चैंपियन बने हुए लूला जनवरी 2003 के विश्व सामाजिक मंच के सम्मेलन से सीधे आकर विश्व आर्थिक मंच के सम्मेलन में साम्राज्यवादी मगरमच्छों से 'संरक्षणवाद' से बाज आने और 'मुक्त व्यापार' को बढ़ाने की आरजू करने जा पहुँचे थे।

मेहनतकश जनता की दुनिया भर में जारी लूट में अपने हिस्से के लिए सभी साम्राज्यवादी लुटेरों के बीच आपस में गलाकाटू होड़ मची हुई है। जब तक साम्राज्यवाद कायम रहेगा तब तक यह खत्म नहीं हो सकती। यूरोपीय साम्राज्यवादी विश्व सामाजिक मंच का इस्तेमाल अमेरिकी लुटेरों के साथ अपनी होड़ के मद्देनजर कुशलता से कर रहे हैं। यूरोपीय साम्राज्यवादियों के साथ एक मुसीबत यह भी है कि उनके देशों का मेहनतकश अवाम भूमण्डलीकरण की नीतियों के खिलाफ आसानी से घुटने नहीं टेक रहा है। इसका कारण यूरोपीय मज़दूर आंदोलन का पिछला शानदार इतिहास है। इसलिए यूरोपीय साम्राज्यवादी ऐसे मंचों पर उपस्थित होकर 'भूमण्डलीकरण विरोधियों' के साथ खड़ा होकर अपने देशों में मेहनतकश अवाम के गुस्से की आग को थोड़ा ठण्डा करना चाहते हैं। साथ ही वे कुशलता के साथ भूमण्डलीकरण विरोध को अमेरिकी साम्राज्यवाद के विरोध का पर्यायवाची बनाकर जनसंघर्ष की धारा को भटकाने में भी लगे हुए हैं।

विश्व सामाजिक मंच ने साम्राज्यवाद विरोध का जो प्रपंच रचा है, उसे मेहनतकश अवाम को अच्छी तरह समझने की जरूरत है। साम्राज्यवाद की समूची व्यवस्था को तबाह किये बिना एक नई व्यवस्था कायम नहीं की जा सकती। जब तक यह साम्राज्यवादी व्यवस्था कायम रहेगी–मानवता को भूख, बेकारी, लुटेरे युद्धों, अन्याय-उत्पीड़न और पूँजीवाद की विभीषिकाओं से नहीं बचाया जा सकता। विश्व पूँजीवादी व्यवस्था में किसी किस्म के सुधार की गुंजाइश या 'मानवीय चेहरे' वाले भूमण्डलीकरण की बात करना छलावा है। विश्व स्तर पर समाजवादी व्यवस्था ही साम्राज्यवाद-पूँजीवाद का विकल्प हो सकती है और केवल दुनिया के मेहनतकश अवाम के क्रान्तिकारी संघर्षों द्वारा इसे उखाड़ फेंकने क बाद ही नई व्यवस्था कायम की जा सकती है।

आज दुनिया भर में चल रहे पूँजीवाद-साम्राज्यवाद विरोधी जनसंघर्षों को गुमराह होने से बचाने के लिए यह एक जरूरी शर्त है कि डब्ल्यू.एस.एफ. को बेनकाब किया जाये। जो ईमानदार लेकिन दिग्भ्रमित प्रगतिशील बुद्धिजीवी डब्ल्यू.एस.एफ. में शामिल हैं उन्हें भी अगर इस छलावे से बाहर निकालना है तो यह जरूरी है कि बेलाग-लपेट ढंग से डब्ल्यू.एस.एफ. के असली चरित्र का पर्दाफाश किया जाये।

बजा बिगुल मेहनतकश जाग,
चिंगारी से लगेगी आग!

'बिगुल'

मज़दूरों का इंकलाबी अख़बार

सम्पर्क: 69, बाबा का पुरवा,
पेपरमिल रोड, लखनऊ–226006
मूल्य: रु. 3/- वार्षिक
सदस्यता शुल्क रु. 40/-